Handout PDF study material (miyaan nasiruddin)

कक्षा- ग्यारहवीं,विषय- हिन्दी (केंद्रिक)

पाठ्यपुस्तक- आरोह (भाग-1)

गद्य–खण्ड(अध्याय-2)

पाठ – मियां नसीरुद्दीन

प्रस्तुतकर्ता

मिथिलेश कुमार झा

पऊकेवि-4 रावतभाटा

लेखिका (कृष्णा सोबती) का परिचय

जन्म- कृष्णा सोबती का जन्म सन 1925 गुजरात (पश्चिमी पंजाब,वर्तमान में पाकिस्तान) में हुआ था ।

प्रमुख रचनाएं- ज़िंदगीनामा, दिलोदानिश,ऐ लड़की,समय सरगम उपन्यास हैं । डार से बिछुड़ी , मित्रो मरजानी , बादलों के घेरे , सूरजमुखी अंधेरे के कहानी संग्रह हैं । हम हसमत ,शब्दों के आलोक में शब्दचित्र-संस्मरण हैं ।

प्रमुख सम्मान –साहित्य अकादमी सम्मान, हिन्दी अकादमीका शलाका सम्मान, साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार से इन्हें सम्मानित किया गया ।

विशेषताएं- हिन्दी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती की विशिष्ट पहचान है । उनके संयमित लेखन और साफ-सुथरी रचनात्मकता ने अपना एक नित नया पाठक वर्ग बनाया है ।

उन्होंने हिन्दी साहित्य को कई ऐसे यादगार चरित्र दिए हैं ,जिन्हें अमर कहा जा सकता है ; जैसे मित्रो ,शाहनी, हशमत आदि ।

कृष्णा जी के भाषिक प्रयोग में भी विविधता है । उन्होंने हिन्दी की कथा भाषा को एक विलक्षण ताजगी दी है । संस्कृतनिष्ठ तत्समता , उर्दू का बांकपन , पंजाबी की ज़िंदादिली , ये सब एक साथ उनकी रचनाओं में मौजूद हैं ।

- मियां नसीरुद्दीन पाठ के शब्दार्थ
- मसीहा= देवदूत, लुत्फ= मजा,(आनंद) , हुनर=कौशल, ठिया = जगह ,रुक्का=पत्र
- नानबाई = तरह तरह की रोटी बनाकर बेचनेवाला , काइयां = धूर्त ,पेशानी=माथा
- अखबारनवीस=पत्रकार,खुराफात=शरारत, इल्म=ज्ञान,वालिद=पिता,मरहूम= स्वर्गवासी
- मोहलत=कार्य विशेष के लिए मिलने वाला समय, लमहा भर=क्षणभर,नसीहत=सीख
- बाजा फरमान= ठीक बात कहना , शागिर्द = शिष्य , जमात = कक्षा, (श्रेणी)
- रूखाई= उपेक्षित भाव , तरेरा=घूरकर देखा , जहमत उठाना= तकलीफ ,
- मजमून = मामला,(विषय) ।

- मियां नसीरुद्दीन पाठ का मूलभाव
- मियाँ नसीरुद्दीन शब्दचित्र हम-हशमत नामक संग्रह से लिया गया है। इसमें खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन के व्यक्तित्व ,रुचियों और स्वभाव का शब्दचित्र खींचा गया है ।
- मियाँ नसीरुद्दीन अपने मसीहाई अंदाज से रोटी पकाने की कला और उसमें अपने खानदानी महारत को बताते हैं । वे ऐसे इनसान का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने पेशे को कला का दर्जा देते हैं और करके सीखने को असली हुनर मानते हैं ।

- मियां नसीरूद्दीन पाठ का सारांश
- मियाँ नसीरुद्दीन से लेखिका की मुलाक़ात
- एक दिन दोपहर में लेखिका जामा मस्जिद के निकट बसे पुराने मटियामहल के गढ़ैया मोहल्ले से गुजर रही थी । वहाँ से निकलते समय उसने एक साधारण–सी दुकान पर ढेर–सा आटा गूथते हुए देखकर सोचा , शायद सेवइयों की तैयारी होगी ,पर पूछने पर पता चला कि वह नान अर्थात रोटियाँ बनाने वालों के मसीहा कहे जाने वाले व छप्पन प्रकार की रोटियां बनाने में माहिर मियाँ नसीरुदीन नानबाई की दुकान थी । मियाँ अंदर ही चारपाई पर बैठे बीड़ी के दम ले रहे थे । उनके चेहरे पर गहरे अनुभव की झलक थी और आंखो में चुस्ती और चतुराई चमक रही थी ।
- मियाँ नसीरुद्दीन का अपने खानदानी पेशे पर अभिमान
- मियाँ नसीरुद्दीन का अपने खानदानी पेशे पर अत्यंत अभिमान था । लेखिका दवारा यह पूछने पर कि उन्होंने इतने प्रकार की रोटियां बनाने की कला को कहाँ से सीखा ? पर वे अपने बेपरवाही वाले खास अंदाज में उसे बताते हैं कि नानबाई का काम कई पुश्तों से उनके घर में चला आ रहा है और उन्होंने यह कार्य अपने पिता मियाँ बरकत शाही से सीखा , वही उनके गुरु थे । मियां नसीरुद्दीन अपनी खानदानी शान का अहसास करते हुए उन्हे बताते हैं कि उनके वालिद मियां बरकत शाही ,गढ़ैया वाले नानबाई के नाम से मशहूर थे तथा उनके दादा साहिब मियाँ कल्लन भी बहुत उंचे दर्जे के नानबाई थे ।

- रोटी बनाने की कला का सीखना
- लेखिका के दवारा मियाँ नसीरुद्दीन से उन्हें उनके पिता व दादा से मिली किसी सीख के विषय में पूछने पर वे बताते हैं कि हुनर सच्ची लगन और मेहनत से सीखा जाता है । जैसे पढ़ाई में अलीफ़ से शुरू होकर आगे बढ़ा जाता है या फिर कच्ची, पक्की से होती हुए ऊंची जमातों में पहुंचा जाता है, वैसे ही हुनर सीखने के लिए उससे जुड़े हुए छोटे से -छोटे काम स्वयं करने पड़ते हैं । छोटे काम करके ही फिर बड़े कामो की तरफ बढ़ा जाता है । मियाँ अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि उन्होंने भट्टी बनाने ,भट्टी में आँच देने और बर्तन धोने तक के छोटे- छोटे काम अपने हाथ से करके रोटी बनाने की कला को सीखा था । वे आगे बताते हैं कि अपने पिता की इस दुकान पर भी वह सीधे आकर नहीं बैठे थे ,अपितु इसके लिए भी उन्होने गली – गली सामान बेचने का अनुभव प्राप्त किया था जिसके उपरांत ही उन्हें यह जिम्मेदारी मिली थी ।
- खानदानी बड़प्पन का गर्व
- लेखिका दवारा अन्य नानबाइयों के विषय में पूछने पर मियाँ नसीरुद्दीन उन्हें बताते हैं कि वहाँ अन्य नानबाई अवश्य हैं, किन्तु खानदानी नहीं ।
- अपने परिवार के इतिहास पर गौरवान्वित होकर वे उन्हें बताते हैं कि एक बार बादशाह सलामत ने उनके बुजुर्गों से कहा कि ऐसी चीज़ बनाओ ज़ो न आग से पके, न पानी से बने । उन्होने ऐसी चीज़ बनाई जिसे बादशाह ने खूब पसंद किया, लेकिन वे उसके विषय में नहीं बताते । अपने पूर्वजों की प्रशंसा करते हुए वे कहते हैं कि खानदानी नानबाई कुएँ में भी रोटी पका सकता है । लेखिका दवारा कहावत की सच्चाई पर प्रश्नचिन्ह लगाने पर वे भड़क उठते हैं । लेखिका जब उनसे यह पूछती है कि उनके बुजुर्ग किस बादशाह के यहाँ काम करते थे तो उसे सुनते ही उनका स्वर बदल जाता है । वे स्वयं बादशाह का नाम न जानने के कारण इधर-उधर की बातें करने लगते हैं, किंतु लेखिका दवारा बार-बार पूछने पर वे अंत में उसे खीझकर बोलते हैं कि आपको कौन-सा उस बादशाह के नाम चिट्ठी-पत्री भेजनी है। कहकर उसकी बातों को टाल देते हैं ।

- शौक एवं कद्र के अभाव का दर्द
- लेखिका से पीछा छुड़ाने के लिए मियाँ नसीरुद्दीन, बब्बन मियाँ को भट्टी सुलगाने का आदेश देते हैं। लेखिका ने उनके बारे में जानना चाहा तो वे कहते हैं कि वे उनके कारीगर हैं। लेखिका उनके बच्चों के विषय में जानना चाहती थी, किंतु उनके चेहरे पर छुपे हुए रोष को देखने के उपरांत वे अपना विचार त्याग देती है और उनके कारीगरों के विषय में बातें करने लगती हैं । मियाँ नसीरुद्दीन उन्हें बताते हैं कि वे उन्हें दो रूपये मन आटे की व चार रूपये मन मैदे की मजूरी देते हैं ।
- लेखिका द्वारा रोटियों की किस्में जानने की इच्छा से पूछे गए सवाल पर वे बाकरखानी, शीरमाल, ताफ़तान, खमीरी इत्यादि रोटियों के फटाफट नाम गिनवा देते हैं । वे तुनकी रोटी की तारीफ़ करते हुए कहते हैं कि वह पापड़ से भी महीन होती है, लेकिन कहते-कहते वह पिछले ज़माने की यादों में खो जाते हैं और कहते हैं कि पहले के ज़माने जैसा खाने-पकाने का शौक अब किसे है? न तो लोगों को वह शौक है और न उन चीजों की कद्र। आज के ज़माने में तो भारी एवं मोटी तंदूरी रोटी का बोलवाला है। क्या बनाएँ और क्या खिलाएँ ?